# चमरासुर

शमोएल अहमद

# चमरासुर

## शमोएल अहमद

*प्रकाशक: नॉटनल*

*प्रकाशन: फ़रवरी, 2023*

© शमोएल अहमद

चमार से घास भी जलती है ….!

चमरासुर शेर से जलता है ! शेरों वाला खिलौना हाथ आ जाए तो गर्दन मरोड़ देता है और धुँध में कहीं छवि सी उभरती है... महिषासुर के सीने में पैवस्त त्रिशूल की नोक और शेर पर सवार सिंहासिनी...। पिछले साल दशहरा में उसने कोई पचीस शेरों की गर्दन मरोड़ी थी।

दशहरा के मेले में वो दिनभर घूमता रहता था। पंडाल से पंडाल के चक्कर लगाता और जहां कहीं शेरों वाला खिलौना नज़र आता खरीद लेता और उसकी गर्दन मरोड़कर फेंक देता।

बोरिंग रोड पर पिछली बार अक्षरधाम जैसा पंडाल बना था जो लगभग पैंसठ फुट लम्बा और पचपन फुट चौड़ा था। माँ अजरिया की मूर्ति बारह फुट ऊँची  थी। पंडाल में और भी मूर्तियाँ थीं। देवी माँ के नारों से पंडाल गूँज रहा था। चमरासुर ने उस दिन कोई दस शेरों की…।

बोरिंग रोड से ज्यादा भीड़ डाक बंगला चौक पर नज़र आई। सुबह दस बजे ही देवी के पट खुल गये थे। लोग दर्शन के लिए उमड़ पड़े थे। शाम तक तांता लग गया। कोतवाली मोड़ से लेकर डाक बंगला चौक तक लोगों का हुजूम था।  मनोरंजन करते नाग-नागिन भी नज़र आए। माँ की मूर्ति आशीर्वाद मुद्रा में बनाई गयी थी। सजावट में सबसे ज़्यादा ई.एल.डी. बल्ब का इस्तेमाल हुआ था। काँच की चूड़ियां,